बुद्धवर्ष २५५१, अधिक ज्येष्ठ पूर्णिमा, ३० जून, २००७ वर्ष ३६ अंक १३

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

For Patrika in various languages, visit: **www.vri.dhamma.org/newsletters**

धम्मवाणी

परे च न विजानन्ति, मयमेत्थ यमामसे।
ये च तत्थ विजानन्ति, ततो सम्मन्ति मेधगा॥

धम्मपद ६, यमक वग्गो

अनाड़ी लोग नहीं जानते कि हम यहां (इस संसार) से जाने वाले हैं। जो इसे जान लेते हैं उनके झगड़े शांत हो जाते हैं।

सांप्रदायिक सौहार्द

(पूज्य गुरुदेव श्री सत्यनारायणजी गोयन्का के सार्वजनिक प्रवचनों से)

शांतिप्रेमी सज्जनो, सन्नारियो!

अमन-चैन चाहने वाले सज्जनो, सन्नारियो!

आओ, हम शांति की बात करें, अमन-चैन की बात करें, धर्म की बात करें। धर्म में तो शांति ही शांति है। अमन-चैन ही अमन-चैन है। संसार में कितनी धार्मिक परंपराएं हैं, कितने संप्रदाय हैं, कितनी मज़हबी जमातें हैं। सब में परस्पर प्यार होना चाहिए। मोहब्बत होनी चाहिए। इसी में सबका भला है। सबका कल्याण है। पर प्यार-मोहब्बत कैसे हो? सभी परंपराओं में कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो सब को मान्य होती हैं, जिसको सब मानते हैं। परंतु कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें सब नहीं मानते। जिन-जिन बातों को सब मानते हैं, उन्हीं को उजागर करना चाहिए। उन्हीं की चर्चा करनी चाहिए। जहां सर्वसम्मति नहीं है, एक मत नहीं है, उन बातों को हम दूर रखें, अलग रखें। उनकी चर्चा करके हमें क्या मिलेगा? जिन बातों में कोई मतभेद नहीं है, उनकी चर्चा करेंगे तो प्यार बढ़ेगा, मोहब्बत बढ़ेगी, मैत्री बढ़ेगी।

भगवान बुद्ध के पास कभी-कभी कोई व्यक्ति किसी बात को लेकर वाद-विवाद करने आ जाता था तो वे मुस्कराकर कहते थे – अरे भाई, जिन बातों में हम एक मत हैं, चलो उनकी चर्चा करें न। जिन बातों में हम एकमत नहीं हैं, उनको एक ओर रखो। बस यही समझदारी है। यही प्यार बढ़ाने का रास्ता है। दुनिया का कोई भी संप्रदाय ऐसा नहीं, दुनिया का कोई मज़हब ऐसा नहीं, कोई धार्मिक परंपरा ऐसी नहीं कि जिसमें अच्छी बातें नहीं हों। अच्छी बातें सब जगह हैं। इसलिए जो अच्छी बातें हैं, हम उन्हीं को महत्त्व दें। अच्छी बातों में मतभेद नहीं हुआ करता। नेकी भी है, बदी भी है। जो-जो नेकी की बातें हैं, उनको उजागर करें।

हम बगीचे में जाते हैं। वहां फूलों के अनेक पौधे हैं और हर पौधे में फूल खिले हैं। किसी में इस रंग के, किसी में उस रंग के। सब बड़े खूबसूरत हैं। सब में बहुत अच्छी सुगंध है। हम फूल को स्वीकार करें। इस पौधे का फूल है कि उस पौधे का फूल है, उसमें कोई भेदभाव नहीं। फूल तो फूल है। लेकिन यह ख्याल रखें कि हम स्वीकार करेंगे फूल को। उसी डाल पर फूल के साथ-साथ कांटे भी उगे होंगे। पर हम सारी डाल को स्वीकार नहीं करते। हम तो उस पर उगे हुए फूल को स्वीकार करते हैं। फिर यह फूल इस पौधे का है या उस पौधे का है, इससे हमको कोई लेन-देन नहीं है। फूल फूल है, सबको प्रिय है। किसी के साथ हमें अपने संबंध सुधारने होते हैं तो हम फूलों का एक बहुत सुंदर गुच्छा भेंट करते हैं, कांटों की डाली नहीं। कभी कोई किसी को कांटों की डाली नहीं भेंट करता, नहीं तो प्यार कैसे होगा? फूल भेंट करना है और फूल सब जगह हैं। आओ! फूल ही फूल देखें, कांटों को एक ओर रखें। तब देखेंगे कि कितना प्यार, कितनी मोहब्बत, कितनी मैत्री, कितनी सद्भावना अपने आप जागेगी। जागेगी ही।

सम्राट अशोक की समझदारी

भारत में भगवान बुद्ध के लगभग दो सौ वर्ष के बाद एक महान सम्राट हुआ अशोक। वह कुछ समय तक गलत रास्ते पर रहा। फिर उसे होश आया। भगवान बुद्ध की शिक्षा समझ में आयी। उस रास्ते पर चलने लगा तो वह पूर्णतया बदल गया। अब वह चाहता है कि मेरी प्रजा में खूब सुख-शांति हो। आपस में खूब प्यार हो। इसके लिए उसने जगह-जगह शिलालेख लिखवाये। वह अपनी प्रजा को समझाता है कि अरे भाई, कभी दूसरे संप्रदाय की निंदा मत करना। सभी संप्रदायों में जो अच्छी बातें हैं, उन्हें उजागर करो। कितनी समझदारी की बात की। भारत में उन दिनों भी अनेक संप्रदाय थे, जैसे आज हैं।

जो-जो बातें सब मानते हैं, सब स्वीकार करते हैं वही सही धर्म है। धर्म की बातें सब स्वीकार करेंगे। धर्म के नाम पर जब अधर्म होता है तो उसे कौन स्वीकार करेगा? तो धर्म की बातें स्वीकार करें, उसी की चर्चा करें। जहां सर्वसम्मति है, उन पर चर्चा हो। अरे! जहां सम्मति नहीं है, आपस में मतभेद है, उसे एक ओर रखें। उसकी चर्चा करेंगे तो झगड़े होंगे, फसाद होंगे, विवाद होंगे, लड़ाइयां होंगी, खून खराबा होगा, इसलिए उसे एक ओर रखें।

उस सम्राट अशोक ने भी यही कहा कि किसी दूसरे संप्रदाय की किसी बात पर निंदा मत करो। जो आदमी अपने संप्रदाय की प्रशंसा करता है और दूसरे संप्रदाय की निंदा करता है, वह अपने संप्रदाय की कब्र खोदता है, अपने संप्रदाय का नाश करता है। यह

कितनी बड़ी समझदारी की बात है। अरे, जहां-जहां अच्छाई हो, उस अच्छाई को स्वीकार करें, चाहे कहीं भी हो।

इसीलिए दो मुस्लिम भाई जब आपस में मिलते हैं तो एक कहता है –**अस्सलाम वाअलयकुम**। यानी आपका मंगल हो, आपकी सलामती हो, आपकी हिफाजत हो! बदले में दूसरा कहता है – **वाअलयकुम अस्सलाम**। आपका भी मंगल हो, आप भी सलामत रहो, आपकी भी हिफाजत हो! जो सलामती देता है उसे ही मुसलमान कहते हैं। जो सलामती न दे तो मुसलमान कैसे हुआ? सब को सलामत रखे, अपने आपको भी, औरों को भी, तो सही माने में मुसलमान हुआ। मुकम्मल ईमान है तो मुसलमान है, मुसल्लम ईमान है तो मुसलमान है। अपने नाम के गौरव को बनाये रखें, खूब हिफाजत, खूब सुरक्षा! अपनी भी सुरक्षा हो, औरों की भी सुरक्षा हो, तो सही माने में मुसलमान हुए।

अरे, सभी संप्रदायों में ऐसी बात है न! कहीं देखो, मिलेंगे तो आपस में मंगल भावना लिए हुए मिलेंगे। भगवान बुद्ध की परंपरा में कहते हैं **'भवतु सब्ब मङ्गलं'**– सबका मंगल हो! **'सब्बे सत्ता सुखी होन्तु'**– सारे प्राणी सुखी हों! **'सर्वे भवन्तु सुखिनः।'** अर्थात यही कहा जाता है कि सब सुखी हों! एक दूसरे की निंदा करेंगे तो सुखी कैसे होंगे? झगड़े-फसाद करेंगे तो सुखी कैसे होंगे? अतः अमन चैन का रास्ता यही है कि सब के लिए मंगल कामना करें, सब के भले की बात करें।

जद्दो-जिहाद

पैगंबर साहब ने बहुत साफ़ शब्दों में कहा कि कभी किसी बेकसूर व्यक्ति की हत्या मत कर देना। किसी महिला की हत्या मत कर देना। किसी बच्चे की हत्या मत कर देना। किसी दूसरे मज़हब के पुरोहित की, पुजारी की, संत की हत्या मत कर देना। किसी मज़दूर की हत्या मत कर देना। किसी पेड़-पौधे को नुकशान न पहुँचा देना। **हत्या मत कर देना**। अहिंसा सिखाते हैं। जिहाद की बात है। जिहाद क्या होता है? **'जद्दो-जिहाद'** –संग्राम करना होता है, परिश्रम करना होता है, पराक्रम करना होता है। किससे संग्राम करना होता है? **हमारे अंदर जो खोट है, हमारे अंदर जो मैल है, उस मैल को दूर करने का संग्राम करना होता है**। यह जद्दो-जिहाद सारे जीवन भर चलता है; सारे जीवन भर का काम है। इस मैल को नहीं निकालेंगे तो न हम सुखी होंगे और न दूसरे को सुखी होने देंगे। हम भी दुःखी रहेंगे और औरों को भी दुःखी बनायेंगे। यह जद्दो-जिहाद जीवन भर का काम है।

यही बात अपने यहां के एक और संत ने कही –**'संत संग्राम है, रात-दिन जूझना।'** जो संत है उसे सारे जीवन भर संग्राम करना पड़ता है। रात-दिन संग्राम करना पड़ता है। क्या संग्राम करना पड़ता है? क्या जद्दो-जिहाद करना पड़ता है? अपने भीतर के खोट को निकालने का। जब तक भीतर मैल है –क्रोध है, द्वेष है, दुर्भावना है, दुश्मनी है; प्यार नहीं है, मोहब्बत नहीं है –तब तक स्वयं भी दुःखी है तथा औरों को भी दुःखी बनाता है। उस आदमी में धर्म का नामोनिशान नहीं है। उस आदमी में मज़हब का नामोनिशान नहीं है। वह सही रास्ते नहीं चल रहा, गलत रास्ते पर है। ऐसे किसी गलत रास्ते पर नहीं चल कर, सही रास्ते पर चले। सच्चाई को हमेशा ध्यान में रखे। सच्चाई ही धर्म है।

मुस्लिम भाई जब कोई काम शुरू करते हैं –जैसे भोजन शुरू करते हैं तो कहते हैं – **'बिसमिल्लाह हिररहमा-निर्रहीम।'** क्या अलरहमान? क्या अलरहीम? परमात्मा करुणा से भरा हुआ है, दया से भरा हुआ है। उसको याद करते हैं। भगवान बुद्ध करुणा से भरे हुए हैं। उनको याद करें –**'महाकारुणिको नाथो'** तब मतभेद नहीं होगा। करुणा तो सबके लिए अच्छी है। हम स्वयं अपने भीतर करुणा जगायें, अपने भीतर मैत्री जगायें, सद्भावना जगायें। अरे, तो मंगल ही मंगल होगा न! हमारा भी मंगल होगा, औरों का भी मंगल होगा। जब-जब कोई आदमी अपने भीतर द्वेष जगाता है, क्रोध जगाता है, दुर्भावना जगाता है, शत्रुता जगाता है, दुश्मनी जगाता है तब क्या होता है? भीतर ही भीतर जलने लगता है। भीतर ही भीतर बेचैन होने लगता है, व्याकुल होने लगता है। क्रोध तो करता है किसी दूसरे को व्याकुल करने के लिए, लेकिन दूसरा तो पीछे व्याकुल होगा, पहले खुद व्याकुल होने लगता है।

इस्लाम के छह स्तंभ हैं उनमें से एक स्तंभ है कि अपने आप को जानो। हमारे दो विपश्यना-शिविर कच्छ की एक मस्ज़िद में लगे। उसमें कुछ आलिम फाजिल मुस्लिम मौलवी भी बैठे। वे बड़े खुश हुए। शिविर खत्म हुआ तो हमें आकर कहते हैं कि हमारी परंपरा में कुछ ऐसे कलाम हैं जिनका अर्थ हम अभी तक नहीं जान पाये थे। **'मन अरफा नफ्सोहु, अरफा रब्बोहु।'** एक तो यह कि तुम अपने आप को जानो। जो अपने आप को जान जाता है, अपने आप को देख लेता है, अपनी सांस को (नफ्स) और अपने शरीर को देख लेता है, वह रब्ब को देख लेता है, परमात्मा को देख लेता है, ईश्वर को देख लेता है, खुदा को देख लेता है, अल्लाहताला को देख लेता है। अब तक हम समझे नहीं कि सांस देखने से अल्लाह को कैसे देख लेता है। अब अपने आप को देखा तो समझ में आया। सच्चाई देखने लगे तो किसी का बुरा नहीं कर सकते। क्योंकि समझने लगे कि दूसरों का बुरा करने के पहले आदमी अपना बुरा कर लेता है। इंसान अपने आपको दुःखी बना लेता है। लेकिन जानबूझ कर कौन दुःखी बनना चाहेगा?

मुस्लिम कहलाए मगर, भूल गया इस्लाम।
नहीं समर्पण शांति है, केवल थोथा नाम॥

इस्लाम शब्द का अर्थ ही है 'शांति', 'समर्पण'! अपने आप को मुस्लिम कहे और यदि शांति का नामोनिशान नहीं; अशांति ही अशांति जीवन में; समर्पण नहीं, अहंकार ही अहंकार है जीवन में; तब इस शब्द का सही प्रयोग नहीं हुआ। सही प्रयोग करने के लिए शब्द का अर्थ समझे, उसके गुणधर्म को समझे और उसे अपने जीवन में धारण करे तो ही इस शब्द का गौरव है।

अपने को जान लेगा तो संत बन जायगा। इसलिए कहा –

सोइ दरबेस दास निज पायो।

यानी वही सच्चा दरबेस है, संत है, जिसने स्वयं अपना दर्शन कर लिया। जो अपने आप को जान लेता है वह रब्ब को यानी ईश्वर को जान लेता है।

इसी भाव को व्यक्त करता हुआ पंजाब का एक मुस्लिम संत कहता है –अरे संत तो संत होता है; क्या हिंदू, क्या मुस्लिम, क्या सिक्ख, क्या क्रिश्चियन! जिसने मन को शांत कर लिया, निर्मल कर

लिया वह संत हो गया। पंजाब का यह मुस्लिम संत कहता है –

'हाशमतिण्हा रब्ब पछाता, जिण्हा अपना आप पछाता।'

– जिसने अपने आप को पहचान लिया, उसने रब्ब को पहचान लिया, परमात्मा को पहचान लिया, खुदा को पहचान लिया। अरे सारी संत परंपराओं में यही बात है। ...

मंगल मित्र,
स. ना. गो.

मंगल मृत्यु

✪ पूज्य गुरुदेव की बड़ी बहन श्रीमती गिन्नी बूआ केडिया ने ३ जून, २००७ को लगभग ८८-८९ वर्ष की पकी हुई उम्र में शांतिपूर्वक शरीर त्याग किया। जब से पूज्य गुरुदेव भारत आये, तब से ही प्रारंभिक शिविरों में भाग लेती रही और नियमित ध्यान करती रही। केंद्रों की स्थापना हुई तो उनमें सम्मिलित होती रहीं। उन्होंने अनेक दीर्घ शिविर किये और बच्चों को भी शिविरों से लाभान्वित करवाया। उनकी पुण्यपारमी निश्चित ही उनकी सद्गति का कारण बनेगी।

✪ अहमदनगर की वरिष्ठ सहायक आचार्या श्रीमती आशा थोरात १९९९ में सहायक आचार्या नियुक्त हुई, तब से नियमित रूप से स्वयं साधना करती हुई धर्मसेवा में लगी रही और अपनी सेवाओं से अनेकों का मंगल किया। २७-२८ मई, २००७ की रात सजगचित्त से शरीर त्यागा। कैंसर की पीड़ा भी उसे धर्म से विचलित नहीं कर सकी। मृत्यु के अंतिम क्षणों तक सजग और सचेत रह कर धर्म-श्रवण करती हुई पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों, वंदनाओं आदि की कैसेट्स सुनती रही। जब भी कोई कुछ पूछता तो इशारों से जवाब दे देती। दिवंगता का मंगल हुआ।

आवश्यकता है।

(१) "**धम्मकानन**", बालाघाट, मध्य प्रदेश के विपश्यना केंद्र में स्थायी रूप से काम करने वाले धम्मसेवक तथा **व्यवस्थापक** (**मैनेजर**) की आवश्यकता है। उचित मानधन दिया जायगा। उम्र ३० वर्ष से अधिक होनी चाहिए। संपर्क – ०९४२५४४७९९६.

(२) इसी प्रकार "**धम्मबोधि**", बोधगया, बिहार के केंद्र के लिए भी। संपर्क –श्री राजेश गुप्ता, मो. ०९९३४९७२७०१, ०९८२९६१७०७७. या श्री गोपाल शरण सिंह, मो. ०९४१५०-०७७३३.

(३) ऐसे ही **'धम्मसरोवर',** धुळे के लिए भी। संपर्क –डॉ. प्रशांत देवरे, मो. ०९३७२८१०३०७.

(४) ऐसे ही **'धम्मपफुल्ल',** अलूर, बैंगलोर के लिए भी। संपर्क – विपश्यना मेडीटेशन एंड रिसर्च सेंटर, बैंगलोर. फोन-**०८०-** २२२२४३३०, ईमेल- info@paphulla.dhamma.org

'धम्मगङ्गा' केंद्र पर निर्माणकार्य

'धम्मगङ्गा' (कोलकाता)केंद्रपर १९८९ में शिविर लगने आरंभ हुए थे। उस समय वहां पर २०० वर्ष पुराने मकान में ही धम्महॉल, पुरुष-महिला निवास तथा स.आ. निवास, रसोईघर और भोजनालय आदि सब कुछ था। पिछले दो-तीन वर्षों से वहां ३० महिलाओं के लिए अलग निवास, १७५ साधकों के लिए अलग ध्यान कक्ष, आचार्य निवासादि बन चुके हैं। इस वर्ष के नवनिर्माण में १५ पुरुष साधकों के लिए सुविधापूर्ण निवास, तथा रसोईघर व भोजनालय अलग से बनाने की योजना है। साधक धर्मदान के इस पुण्यार्जन में भागीदार बन सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क –व्यवस्थापक, 'धम्मगङ्गा' या फोन-संपर्क – (०३३) ३२९५१२४७, २४७५ ७२०८.

धम्मकोण्डञ्ञ का प्रथम शिविर

हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) के समीप कोंडापुर के केंद्र को भगवान बुद्ध के प्रथम शिष्य भिक्षु कोण्डञ्ञ का नाम दिया गया है। आसपास की खुदाई में अनेक प्राचीन अवशेष मिले हैं। इस केंद्र में केवल पुरुषों का पहला शिविर २८-४ से ९-५-०७ तक लगा, जिसमें ८ नये, २ पुराने और ३ धर्मसेवकों को धर्मलाभ प्राप्त हुआ। व्यवस्थापकों और ट्रस्टियों ने हर महीने यहां १८ से २९ तक एक शिविर लगाने का निश्चय किया है।

शिविर के अंतिम दिन स्थानीय समाचार-पत्र के संपादक ने शिविर-स्थल पर आकर साधकों से शिविर-संबंधी प्रश्नोत्तर किये जो अगले दिन के पत्र में प्रकाशित हुआ। इससे स्थानीय लोगों में विपश्यना केंद्र, धर्म और ध्यान के प्रति चेतना जाग्रत हुई। इससे साधकों में बड़ा उत्साह है और साधना की सफलता ने इन्हें और बल प्रदान किया है। निश्चित ही क्षेत्रीय लोगों को इसका बड़ा लाभ मिलेगा। विपश्यना का अभ्यास करके सभी सुखी हों, सब का मंगल हो!

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि पर पालि प्रशिक्षण

'वर्ष २००७-२००८ के लिए विज्ञप्ति'

एक महीने का सघन पालि-हिंदी प्रारंभिक पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००५ में प्रारंभ हुआ था। इस वर्ष इसका तीसरा सत्र है। यह सत्र **४ दिसंबर २००७ (सुबह) से १ जनवरी २००८ (सुबह)** तक बिना किसी अवकाश के चलेगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ अक्तूबर २००७** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं –वे साधक जिन्होंने १. पांच दस दिवसीय विपश्यना शिविर, तथा २. एक सतिपट्ठान शिविर, किया हो तथा जो ३. पंचशील का पालन करते हैं, ४. दो वर्ष से प्रतिदिन नियमित दो घंटे की साधना करते हैं एवं ५. विद्या के प्रति समर्पित हैं। बीस दिवसीय शिविर किये हुए साधक को वरीयता दी जायगी।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता – १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

पाठ्यक्रम के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

एक महीने का सघन पालि-हिंदी उच्च पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००६ में पहली बार प्रारंभ किया गया था। इस वर्ष इसका द्वितीय सत्र है। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम **२ जनवरी २००७ (सुबह) से ३० जनवरी २००८ (सुबह)** तक बिना अवकाश के चलेगा

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ अक्तूबर २००७** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं –➪ इस पाठ्यक्रम के लिए उपरोक्त योग्यताओं के साथ व्ही. आर. आई. द्वारा आयोजित एक महीने का सघन पालि-हिंदी **प्रारंभिक पाठ्यक्रम** पूरा किया होना अनिवार्य है। उन विपश्यी साधकों को जिनके पास उपरोक्त योग्यताएं हैं तथा जिन्हें पालि का प्रारंभिक ज्ञान है, उन्हें वरीयता दी जायगी। ➪➪ इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता – ➪ १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

➪ पाठ्यक्रम के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

इनके लिए आवेदन-पत्र कृपया **विपश्यना विशोधन विन्यास,** धम्मगिरि, इगतपुरी से प्राप्त कर सकते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

ग्लोबल पगोडा के भीतर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक-दिवसीय शिविर

आगामी गुरु-पूर्णिमा के शुभ अवसर पर २९ जुलाई, २००७ को ग्लोबल पगोडा के भीतर एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। साधक भगवान बुद्ध की पावन धातुओं के सान्निध्य में तपने के सुयोग का लाभ ले सकते हैं। शिविर सुबह ११ से सायं ५ बजे तक रहेगा। साधकोंसे निवेदन है कि वे अपनी बुकिंग अवश्य कराएंताकि समुचित व्यवस्था की जा सके। **आषाढ़ पूर्णिमा** के दिन भगवान बुद्ध ने सारनाथ के ऋषिपत्तनमृगदाव वन में पंचवर्गीय भिक्षुओं को अपना पहला धर्मोपदेश दिया था। इसीलिए यह **धम्मचक्क पवत्तन –'धर्मचक्र-प्रवर्तन दिवस'** या **'गुरु-पूर्णिमा'** के नाम से विख्यात हुआ। जो लोग मुंबई के बाहर से एक दिन पहले आ रहे हों उन्हें रात्रि-निवास की व्यवस्था स्वयं कहीं अन्यत्र करनी होगी। पगोडा परिसर में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। कृपया बैठने के लिए आसन, छाता या रेनकोटसाथ लायें। पगोडा साइट तक पहुँचने व अन्य जानकारीके लिए निम्न पते पर संपर्क करें –**संपर्कः** श्री डेरेक पेगाडो, फोनः **०२२**-२८४५-१२०६, २८४५-१२०४/२१११/२२६१; फैक्सः ९१-२२-२८४५-२११२.
Email: globalpagoda@hotmail.com; Website: www.globalpagoda.org

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. दिगंबर धांडे, मुंबई
२. श्री रुद्र दत्त तिवारी, लखनऊ
3-4. Mr. Roger & Mrs. Mersedeh Gosselin, *Canada*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री बसंत कुमार तमंग, नेपाल
2. Ms. Andrea Gerber, *Germany*
3-4. Mr. Per & Mrs. Diana Lustgarten, *Sweden*
5. Ms. Jennifer Lin, *USA*

बालशिविर शिक्षक

१. श्री वी. अरविंद, चेन्नई
२. श्री बी. विनयगम, चेन्नई
३. श्री एम. एस. गोपीकृष्णन, मदुराई
४. श्री कीपु सेरिंग लेपचा, सिक्किम
५. श्री श्रीधर प्रसाद उपरेती, नेपाल
6. Mrs. Tai Yin Ling, *Hong Kong*
7. Mrs. Yung Mei Fong, Lydia, *Hong Kong*
8. Mrs. Hsieh, Rui Mei, *Taiwan*

दोहे धर्म के

धर्म न हिन्दू बौद्ध है, धर्म न मुस्लिम जैन।
धर्म चित्त की शुद्धता, धर्म शांति सुख चैन॥
यही धर्म की परख है, यही धर्म का माप।
जन जन का मंगल करे, दूर करे संताप॥
हिन्दू मुस्लिम बौद्ध हो, जैन इसाई होय।
रागमुक्त जो भी हुआ, वीतराग है सोय॥
सम्प्रदाय ना धर्म है, धर्म न बने दिवार।
धर्म सिखाए एकता, धर्म सिखाए प्यार॥
बढ़ा धर्म के नाम पर, सम्प्रदाय पुरजोर।
जन जन मन व्याकुल हुआ, दुख छाया सब ओर॥
सम्प्रदाय का मद बढ़े, धर्म तिरोहित होय।
अपना भी अनहित करे, जन जन अनहित होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

द्वेस द्रोह सारा मिटै, बैर भाव ह्वै दूर।
भाई भाई मँह जगै, फेर प्यार भरपूर॥
द्वेस द्रोह सैं का मिटै, प्यार परस्पर होय।
सुद्ध धरम फिर स्यूं जगै, जन जन मंगळ होय॥
सुद्ध धरम ऐसो जगै, अंतर निरमळ होय।
जनमां रा बंधन कटै, मुक्ति दुखां स्यूं होय॥
सुद्ध धरम जग मँह जगै, हुवै विसमता दूर।
छावै समता सुखमयी, मंगळ स्यूं भरपूर॥
जिण विध मेरा दुख कट्या, सैं का दुख कट ज्याय।
सुद्ध धरम सब नै मिलै, सुखी सभी ह्वै ज्याय॥
जिण विध मेरा दिन फिर्या, सैं का दिन फिर ज्याय।
संप्रदाय रै जाळ स्यूं, मुक्त सभी ह्वै ज्याय॥

आकांक्षा इंटरप्राईसेस
ई - १/८२, अरेरा कालोनी, भोपाल (म. प्र.) - ४६२०१६
फोनः (०७५५) २४६१२४३, २४६२३५१; फैक्सः (०७५५) २४६८१९७
Email: aeent@airtelbroadband.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५१,** **अधिक ज्येष्ठ पूर्णिमा,** **३० जून, २००७**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** १९१५६/७१. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org